X 71

पंकज कुमार

मैथिली उपन्यासक विकास

(1)

उपन्यास गद्य साहित्यक एकटा एहन अंग थिक जतय कोनो बातकेँ सम्पूर्णताक संग कहबाक अवसर रहैत छैक। एकर उद्गम स्थल पाश्चात्य साहित्यकेँ मानल जाइत अछि। अंगरेजीक 'नॉवेल' शब्दक लेल एकर ऐतिहासिक प्रयोग भारतीय साहित्यमे सर्वप्रथम बंगला साहित्यकार भूदेव मुखोपाध्याय 'ऐतिहासिक उपन्यास' नामक अपन कृतिमे 1862 ई०मे कयलनि। तत पश्चात 1882 ई० मे हिन्दीक पहिल उपन्यास 'परीक्षा गुरु' प्रकाशित भेल। एकर लेखक श्री निवास दास छलाह। मैथिली साहित्यमे प्रथम उपन्यास लिखबाक श्रेय जनार्दन झा 'जनसीदन'केँ जाइत छनि। हिनक 'निर्दयी सासु' उपन्यास नामे अभिहित भऽ 1914 ई॰ मे मिथिला मिहिरक अंक समभेधारावहिक रूपमे प्रकाशित भेल। ओना पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित मैथिलीक पहिल उपन्यास जीवछ मिश्रक 'रामेश्वर' थिक, परंच मैथिली उपन्यास चर्चित भेल 'कन्यादान'क प्रकाशनक उपरांत।

आरम्भसँ लऽ कऽ अद्यपर्यंत उपन्यास लेखन पर दृष्टिपात करैत एकर विकास यात्राकेँ एहि तरहेँ वर्गीकृत कएल जा

संकेत अछि :-

(i) आरंभिक काल → 1914 सँ 1921 धरि
(ii) निर्माण काल → 1922 सँ 1932 धरि
(iii) विकास काल → 1933 सँ 1950 धरि
(iv) विस्तार काल → 1951 सँ 1990 धरि
(v) संक्रमण काल → 1991 सँ अद्यपर्यन्त

5. मैथिली उपन्यास साहित्यमे सर्वप्रथम लेखक लोकनि कोनो आन भाषक कथाक अनुवाद मैथिलीमे करैत छलाह, तत पश्चात ई प्रवृत्ति बदलल आ मौलिक उपन्यासक रचना होमय लागल। एहि तरहक मौलिक उपन्यासकार लोकनिमे सर्वप्रथम रासबिहारी लाल 'सुमति' उपन्यासक रचना कयलनि। ई उपन्यास शिल्पक दृष्टिँ अत्यन्त हीन स्तरक अछि। एकर पश्चात जनसीदन जी अपन 'शशिकला', 'निर्दयी सासु' 'कलियुगी सन्यासी' 'पुनर्विवाह' आदि उपन्यास ल' अवतरित भेलाह। हिनकामे कथानकके ग्रहण करबाक अद्भुत क्षमता त' छल मुदा उपन्यास सभमे चरित्र-चित्रण अपुष्ट तथा मनोवैज्ञानिकताक सर्वथा अभाव अछि। तथापि ई मैथिली उपन्यास साहित्यके नव दिशा प्रदान कएलनि।

हिनक पश्चात कुमार गंगा-

(3)

नंद सिंहक मैथिली मे यथार्थ अर्थ मे मैथिली उपन्यासक सृजन आरम्भ कयलनि। ई 'मनुष्क मोल' तथा 'विवाह' दुइ गोट उपन्यास लिखलनि। हिनक पश्चात गंगापति सिंहक 'सुशीला' तथा ब्रजनन्दनक 'असहाय जाया' उपन्यास। अवैध जाहि मध्य मैथिल नारीक असहाय जीवनक दुःखद चित्रण भेल अछि। लक्ष्मीपति सिंहक 'चामुण्डा' मे कथाक संघटन, चरित्र-चित्रण, एवं आत्म मर्यादाक रक्षाक महत्व सफल रूपें प्रतिपादित भेल अछि। हरिनंदन ठाकुरक 'माधवी माधव' मे रोमांटिक कथा कहल गेल अछि। पश्चात किरण जीक 'चन्द्रग्रहण' जनजीवन क सुस्पष्ट एवं सामाजिक अभिबोध सँ पूर्ण उपन्यास अछि।

मैथिली साहित्यकेँ लोकप्रिय बनएबामे प्रो० हरिमोहन झाक 'कन्यादान' महत्वपूर्ण स्थान अछि। एहिसँ मैथिली भाषा-भाषी शिक्षित जन समुदायक जतबा मनोरंजन भेल ततबा मैथिली साहित्यक कोनो अन्य कृति सँ नहि। एकर कथातत्व प्रमुख नहि अछि। 'द्विरागमन' मे आबि ई तत्व आओर गौण भऽ गेल। वस्तुतः हिनक उपन्यास जीवनक व्यापक ओ बहुविध चित्रणक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण नहि अछि।

Scanned with CamScanner

एकर महत्त्व अछि प्रमुख ओ गौण
दुहू पात्रक विशिष्ट चरित्रांकणक दृष्टिएँ।

योगानन्द झाक सुप्रसिद्ध
उपन्यास 'भलमानुष' एक गोट क्रान्तिकारी
उपन्यास सिद्ध भेल। यथार्थवादी दृष्टिकोण,
सामाजिक रूढ़िक प्रति विद्रोह, मानव
मनोविज्ञानक सफल आकलन एवं जी-
वन्त चारित्र-चित्रणक दृष्टिएँ ई अपना
युगक श्रेष्ठ उपन्यास छल। श्री वैधनाथ
मिश्र 'यात्री'क 'पारो' सेहो एहि समयमे
प्रकाशित भेल। ई उपन्यास फ्रायडक यौन
विश्लेषणक चेतनासँ अनुप्रमाणित अछि।
मैथिली उपन्यासक हेतु एक नववस्तु
छल जकर प्रशंसा ओ फज्जति दुहू
भेटलैक। एहि युगक व्यासजीक 'कुमार'
उपन्यासमे जीवनक विविध पक्षक चित्रण
कएल गेल अछि। शारदानन्द जयवार
उपन्यास ओ लिखलनि जकर कथानक
अश्लीलतासँ भरल ओ निम्न
स्तरक छल। एहिसँ अतिरिक्त
छेदी झाक 'उर्मिला' ईशानाथजीक
'सेवा' भुवनजीक 'समाज' अमाजीक
'वीर कन्या' बदरीनारायण झाक 'चन्द्रकला'
क रचना भेल। ई सभ उपन्यास
उपदेशात्मक उपन्यास छल।

Scanned with CamScanner

(5)

स्वतन्त्रता भेटला उत्तर सामान्य जनता महंगी, बेकारी, रौदी आदिक मारिसँ प्रभावित छल। शिक्षाक क्षेत्रमे किछु सुधार तँ भेल मुदा बेकारीक समस्या चरम पर छल। एहि समयमे नवसामन्तवादक उदयक कारणेँ समाजक मानसिक संसारमे बड़ उथल-पुथल भेल। एहि समयमे डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा 'प्रतिमा' तथा 'मधुश्रावणी' क रचना कयलनि। कोमल कल्पना, भावुकता परिवेशक चित्रण आदिक दृष्टिसँ हिनक उपन्यास बेस महत्वपूर्ण अछि। यात्री जी अपन प्रतिभाकेँ विकसित कए 'नवतुरिया' रचलनि। ओना इहो वैवाहिक समस्या पर आधारित अछि मुदा भाषा आ उपन्यासक दृष्टिएँ 'नवतुरिया' मैथिली साहित्यक एक गोट युगान्तकारी रचना थिक। राजकमल चौधरीक 'आदिकथा' जे फ्रायडक मनोविश्लेषण पद्धति एवं चेतनाजें प्रभावित रहितहुँ अपन मनोवैज्ञानिकता सहजता तथा कुशल परिवेशक कारणेँ बेसी लोकप्रिय भेल। हिनक 'पाथर फूल' ओ 'आन्दोलन' सेहो प्रकाशित अछि।

मैथिली कथाकार सोमदेव

6

सोमदेव चोनीदाई उपन्यासक रचना कयलनि। शिल्पक दृष्टिसँ किछु चमत्कारिक प्रयोग एहिमे भेल अछि। एकर पश्चात मणिपद्मक ऐतिहासिक उपन्यास 'विद्यापति' प्रकाशित भेल। गीतकार आ कथाकार मायानन्द मिश्र 'बिहाड़ि पानि आ पाथर' नामक उपन्यास लिखलनि जे भलो विश्लेषण चेष्टाक अछैतहुँ कथानकक दुर्बलताक कारणें एकदम नहि भ' सकल। सुधांशु शेखर चौधरीक उपन्यास 'ई बतहा संसार' मे स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात भ्रष्टताक पथ पर बढ़ैत ग्राम्य जीवनक यथार्थवादी चित्र अंकित भेल अछि। अमरजीक दोसर उपन्यास 'विदागरी' मे मैथिली समाजक मनोविज्ञानक सुन्दर निरूपण भेल अछि। सुप्रसिद्ध साहित्यकार धीरेन्द्र 'भोरुकवा' आँचलिक उपन्यास प्रणाली मे लिखलनि। एहि क्रममे श्री ललितक 'पृथ्वी पुत्र' सेहो आँचलिक उपन्यास थिक जाहिमे मैथिल भूमिहीन वर्गक चित्रण भेल अछि। एकर पश्चात सोमदेवक 'ब्रह्म पिशाच' कथ्य ओ शिल्पक दृष्टिएँ प्रसिद्ध भेल। मायानन्द मिश्र 'खोता ओ चिड़ै' लिखलनि। एहिमे ग्राम्य जीवनक बदलैत परिवेशक चित्रण भेल अछि।

Scanned with CamScanner

(7)

श्री 'रेणुजी' अपन उपन्यास 'दूध-फूल' मे ग्राम्य जीवनक यथार्थ चित्र अंकित कएलनहि छथि जाहिमे ग्राम्य जीवनक सूक्ष्म निरीक्षण ओ गम्भीर अन्तर्दृष्टि अछि। मुदा एकर महत्व मैथिलीक स्वनामधन्य साहित्यकार जीवकान्तक 'पनिपत' आ 'दू कुहेशक बाट' उपन्यासक रचना कएलनि। 'दू कुहेशक बाट' अस्तित्ववादी जीवन दर्शन सँ अनुप्राणित एकटा मनोविश्लेषणात्मक पद्धति मे लिखल गेल उपन्यास थिक। 'पनीपत' एकटा सफल आंचलिक उपन्यास अछि जाहिमे आजुक शिक्षित बेकार ग्राम्य युवकक बेस स्वाभाविक, मनोवैज्ञानिक एवं मार्मिक चित्र अंकित कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त श्री रूपकान्त ठाकुरक 'बदला पर बदला' जासूसी उपन्यास थिक तथा विन्देश्वर मंडलक 'नाटक भेल जिनगीक गेहें' सामाजिक उपन्यास थिक।

श्री मणिपद्मक 'अर्द्ध-नारीश्वर' उपन्यास जीवनक विस्तृत फलक पर अंकित विविध प्रकारक कथावस्तु एवं पात्रक आन्तरिक ऊहापोहक संपुष्ट कथानक प्रस्तुत करैछ। मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार श्री विनोदक 'नयन-

मणि' तथा विद्यानाथ झा 'विदित'क
रोमांचक उपन्यासक श्रेणीमे लिखल गेल
अछि। एहि समयमे व्यासजीक दोसर
उपन्यास 'दू पत्र' प्रकाशित भेल। ई
पत्रात्मक शैलीमे लिखल गेल उपन्यास
थिक जकरा साहित्य अकादमी पुरस्कार
सँ सम्मानित कएल गेल। डॉ० रामदेव
झाक 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी' सेहो
एहि शैलीमे लिखल गेल अछि।
जीवकान्तक 'अगिनबान' खण्ड चित्रा-
त्मक शैलीमे एक गोट नव ढंगक
उपन्यास थिक तँ 'पीयर गुलाब छल'
स्वतन्त्रताक बादक भ्रष्ट होइत ग्राम्य
जीवनक नग्नयथार्थवादी सुरमे लिखल
उपन्यास थिक। प्रो० धीरेन्द्र अपन
दोसर उपन्यास 'कादो आ कोयला'
समाजवादी यथार्थवादी प्रतिमानकें
समक्ष राखि लिखलनि। एकरा अति-
रिक्त मणिपद्मक दुई गोट उप-
न्यास 'राजा सलहेस' आ 'लोरिक
विजय' लोककथात्मक पद्धति पर
लिखल गेल उपन्यास थिक। एकरा
अतिरिक्त दिनक 'कोब्रा गर्ल' एक
गोट जासूसी उपन्यास थिक जाहिमे
रहस्य रोमांचक ताना-भरनीक
मध्य भावुक हृदयक साहित्यकारक
भावुकता आ मानवीय भावनाक
दिग्दर्शन होइछ।

(9)

राजकमल चौधरीक 'एक अनार एक रोगाह' उपन्यास हुनक मृत्युक उपरान्त प्रकाशित भेल। जाहिमे महानगरक भ्रष्ट यथार्थवादी सुरमे लिखल गेल मनोवैज्ञानिक चित्रण भेल अछि। एकर अतिरिक्त डॉक्टर ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क… जनम-जनम हम रूप निहारल' उपन्यास यथार्थ अर्थमे भरल अछि। उपर्युक्त उपन्यासक अतिरिक्त श्री कुंवर कान्तक 'सेहन्ता' श्रीमती श्यामा झाक 'बिनु माइक बेटी' तथा हास्य रस पर आधारित श्री रवीन्द्र ठाकुरक 'गोनू झा' प्रकाशमे आयल अछि। ई उपन्यास सभ जीवन्त भाषा, प्रौढ़ अंकन आ प्रभावकारी चरित्र-चित्रणक दृष्टिसँ उपन्यास साहित्यमे अपन फराक स्थान रखैछ।

मणिपद्म जीक बहुचर्चित उपन्यास 'नैका-बनिजारा' साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत भए अपन महत्वकेँ सिद्ध कयलक। एहि मध्य तीन कथाक गुम्फन भेल अछि - हिमालय अंचलक कनक मंजरी सागर बनिजारा रत्न सेन, एवं महाभिक्षु देव पद्मक कथा। एहि तीन कथाकेँ जोड़ि तत्कालीन समाजक

सजीव चित्र प्रस्तुत कएल। श्री प्रभाष कुमार चौधरीक 'अभिशप्त' 'युगपुरुष' तथा 'हमरा लग रहब' उपन्यासमे युग जीवनमे पसरल दिशाहीनता, नैतिक ह्रास, अनास्था, खंडित विश्वास आदिक चित्रण यथार्थ शैलीमे कएलगेल अछि। श्री गंगेश गुंजनक 'पहिल लोक' एकटा स्हैन शिक्षित नवयुवकक कथा अछि जे समाजमे व्याप्त विसंगति एवं असंतुलनक संवेदनशीलक द्रष्टा बनल थाकल हारल निष्क्रिय बनल रहैत अछि। नित्यानन्द झाक 'धरती जागि उठल' वर्तमान राजनीतिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त करैत अभिजात वर्गक प्रति विक्षोभ ओ सर्वहारा वर्गक प्रति मार्क्सवादी पक्ष ग्रहण कएलक अछि। श्री सुधांशु शेखर चौधरीक 'दारिद्र्य छिम्मरीमे' अमलक जीवन कथाक माध्यमसे निम्न मध्यमवर्गीय परिवारक कतोक समस्या पर विचार विचार व्यक्त कएल अछि एकर अतिरिक्त सुधांशु शेखर चौधरीक 'बतहा संसार' तथा श्रीमति लिली रेक 'मरीचिका' भाव, भाषा, शिल्प कथ्य सम दृष्टिएं पूर्ण अछि। एकर अतिरिक्त लिली रेक 'पटाक्षेप'

तथा मार्कण्डेय प्रवासीक 'हम कालिदास' अ तथा 'अभियान' जेहो प्रकाशित भेल।

एतावता देखैत छी जे मैथिली उपन्यास साहित्यक अत्यन्त समृद्धशाली अछि। मुदा ई परम्परा विस्तार पयबाक, बदला विगत शताब्दीक अन्तिम शताब्दीक धरि अबैत-अबैत कमकि गेल अछि। मैथिली उपन्यासकार जेना लुप्तप्राय भऽ गेलाह। हुनक समक लेखनी कथा, कविता, निबंध, आलोचना दिस उन्मुख भऽ गेल। एहन स्थितिमे मैथिली उपन्यासक रचनाक दयनीय भऽ जाएब स्वाभाविक सन लगैत अछि।

१९९०क उपरान्त किछु उपन्यासक प्रकाशन भेल अछि जाहिमे लिलीरे क 'उपसंहार' धूमकेतुक 'मोड़पर' जगदानंद झाक 'हमरा कन्यादान अछि' साकेतानन्दक 'सर्वस्वांत', रामानंद रेणुक 'उत्तर जनवाद' उषा किरण खानक 'हसीना मंजिल' आदि अछि।

एहि प्रकारें देखैत छी जे विगत शताब्दीक दोसर दशकक पूर्वार्द्धमे मैथिली उपन्यास लेखनक

डॉ पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक